Famers should practice farming through improved technologies-Ram Kathin: NEFORD

Rastriva Sahara, September 15, 2014



(एसएनबी)। नेफोर्ड कट्स भी एक बड़ी चिन्ता का कारण है। ऐसी परिस्थितियों में कृषि उत्पादन में स्थायी एवं सतत् विकास के लिए परम्परागत खेती से इतर नये तरीकों को अपनाना होगा। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर इस कृषक प्रशिक्षण में नरेन्द्र

नोफोर्ड कटस

इंटरनेशनल के

तत्वावधान में

कृषक प्रशिक्षण

देव कृषि विश्व विद्यालय, बीज निदेशालय, कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र एवं नेफोर्ड के वैज्ञानिकों ने किसानों को नई-नई तकनीकों से अवगत कराया। प्रशिक्षण के लिए चुने गये विषयों में जीरोटील से गेहूं की बुवाई, ड्रमसीडर से धान की बुवाई, सण्डा एवं सी-विधि के साथ-साथ कृषि उत्पादन में यंत्रीकरण द्वारा पानी एवं

ऊर्जा की दक्षता बढ़ाने, खेती में विविधिकरण तथा बदलते मौसम में पशुपालन की समस्याएं एवं समाधान आदि पर विशेष रूम से चर्चा की गई। डा. रमाकांत सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के

परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जाने वाली किसानोपयोगी योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए किसानों को उनका लाभ उठाने के लिए आह्वान किया। जनपद के दूर-दराज के गांवों से आए किसान राम प्रकाश सिंह, जोखु सिंह, अशोक यादव, आगम राम, नगीना यादव, राधिका देवी, कुसुम देवी, पुरुषोत्तम यादव लगभग 100 पुरुष एवं महिला किसानों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। संतोष मिश्र, सचिन्द्र सिंह, बुजेश सिंह, विनीत त्रिपाठी, निखिल सिंह आदि उपस्थित रहे।

मऊ इण्टरनेशनल के तत्वावधान में रविवार को कृषक प्रशिक्षण का आयोजन अमरवाणी विकलांग संस्थान के लेवर हाल में किया गया। इसमें 'बदलते परिवेश में कृषि उत्पादन में स्थायी एवं सतत विकास के लिए उन्नत तकनीकों का योगदान' पर विस्तुत रूप से चर्चा करते हुए किसानों को तकनीकी आधारित कृषि के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

नेफोर्ड के निदेशक डा. राम कठिन सिंह ने बताया कि उच्च तकनीकी खेती के माध्यम से किसान अच्छी फसल तैयार कर सकते हैं। सिंह

ने बताया कि आस्ट्रेलियन सरकार की सहायता से जयपुर स्थित कट्स इण्टरनेशनल संस्थान ने 'दक्षिण एशिया में सतत् एवं स्थायी विकास के लिए खाद्यान, जल एवं ऊर्जा

संरक्षण के लिए आपसी सहयोग' नामक एक परियोजना प्रारम्भ की है। जिसे भारत, नेपाल, भुटान, बांग्लादेश व पाकिस्तान के कुल आठ गैर सरकारी संस्थान कार्यान्वित करेंगे, जिनमें नेफोर्ड भी एक है। यह प्रशिक्षण उसी परियोजना के तत्वावधान में किया गया। यह सर्वविदित है कि अब दिन-प्रतिदिन मौसम का मिजाज बदल रहा है। सुखा अथवा बाढ़, तापमान का अचानक बढना या घटना, नये-नये कीट एवं बीमारियों का प्रकोप फसलों को रुग्ण बना रहा है। मौसम की अनिश्चितता के साथ-साथ खेती में बढती लागत